International Journal of Innovations in Research
ISSN: 3048-9369 (Online)

भारतीय ज्ञान परंपरा में जनजातीय भाषाओं का योगदान

डॉ. लोहारसिंह ब्राहम्णे
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शहीद चन्द्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झाबुआ (म.प्र.)
ईमेल आईडी: l.s.brahamne@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18773189

शोध सारांश
भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परम्पराओं में से एक है। भारतीय सभ्यता की परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है और इस दीर्घ कालखंड में विकसित हुई। यह परम्परा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र जैसे -धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, चिकित्सा, कला और समाज में समृद्ध विचारों और अनुभवों का अद्भुत संगम है। इस परंपरा का मूल भारतीय मनीषा की उस चेतना में निहित है,जो जीवन, ब्रह्मांड, आत्मा, धर्म, समाज, नैतिकता, कला, भाषा और सृष्टि के रहस्यों की गहराई से पड़ताल करती है। "वसुधैव कुटुम्बकम् "(सारा विश्व एक परिवार है) और "सर्वे भवन्तु सुखिनः "(सब सुखी हों) जैसे-विचार भारतीय चिंतन की वैश्विक दृष्टि को प्रकट करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा बहुभाषिक , बहुसांस्कृतिक और लोक केंद्रित रही है। इसमें जनजातीय भाषाओं(जैसे भीली, भिलाली, बारेली, गोंडी, संथाली, मुंडारी, हो, कोरकू आदि) का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन भाषाओं के माध्यम से आदिवासी समाज ने अपने अनुभवजन्य ज्ञान , जीवन–दर्शन और प्रकृति –संवेदनशीलता को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित रखा। जनजातीय भाषाएँ लोक साहित्य(लोकगीत, लोकगाथाएँ, लोककथाएँ,मिथक,कहावतें,अनुष्ठानगीत) के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण,वन–जीवन, कृषि, औषधीय ज्ञान , पशुपालन और जल –संरक्षण जैसे विषयों का व्यावहारिक ज्ञान संप्रेषित करती हैं। यह ज्ञान लिखित ग्रंथों से अधिक मौखिक परंपरा पर आधारित होने के बावजूद अत्यंत वैज्ञानिक, टिकाऊ और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल है। भारतीय ज्ञान परंपरा में जनजातीय भाषाएँ सांस्कृतिक पहचान, सामुदायिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं की वाहक हैं। इनमें सहअस्तित्व , सामूहिकता, प्रकृति के प्रति सम्मान और संतुलित जीवन का संदेश निहित है। अनेक धार्मिक –आध्यात्मिक मान्यताएँ, पर्व–त्योहार और अनुष्ठान इन्हीं भाषाओं में व्यक्त होकर भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाते हैं। समकालीन संदर्भ में जनजातीय भाषाओं का संरक्षण भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता के लिए अनिवार्य है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा में जनजातीय भाषाओं का योगदान का विश्वलेशण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि ये भाषाएँ न केवल अतीत की धरोहर हैं , बल्कि स्थायी विकास, पर्यावरणीय संतुलन और समावेशी ज्ञान–निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

कुंजी शब्द: *भारतीय ज्ञान परंपरा, जनजातीय भाषाएँ, आदिवासी संस्कृति, लोक ज्ञान, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत*

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

International Journal of Innovations in Research
ISSN: 3048-9369 (Online)

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम , समृद्ध और विविधतापूर्ण ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसकी मूल विशेषता यह है कि ज्ञान केवल शास्त्रों और ग्रंथों तक सीमित न होकर लोकजीवन , आचार–व्यवहार और मौखिक परंपराओं में भी समान रूप से विकसित हुआ है। इसी व्यापक ज्ञान –संरचना में जनजातीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ये भाषाएँ आदिवासी समाज के जीवनानुभव , प्रकृति–बोध और सांस्कृतिक चेतना की सजीव अभिव्यक्ति हैं। जनजातीय भाषाओं के माध्यम से वन , भूमि, जल, पशु–पक्षी, औषधीय वनस्पति, कृषि तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा बहुमूल्य लोकज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रहा है। लोकगीतों , कथाओं, मिथकों, अनुष्ठानों और परंपरागत कथनों में निहित यह ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यावहारिक , जनोन्मुखी और प्रकृति–संवेदनशील बनाता है। इन भाषाओं में न केवल जीवन जीने की कला निहित है , बल्कि सामूहिकता, सहअस्तित्व और संतुलन का गहन दर्शन भी समाहित है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा की समग्रता को समझने के लिए जनजातीय भाषाओं के योगदान का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। ये भाषाएँ भारतीय संस्कृति की जड़ों को सुदृढ़ करती हुई ज्ञान की उस लोकधारा को उजागर करती हैं , जिसने भारत की बहुलतावादी और समावेशी पहचान को आकार दिया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आशय

भारतीय ज्ञान परंपरा का आशय उस प्राचीन , सतत और जीवनोपयोगी ज्ञान –व्यवस्था से है , जो भारत में शास्त्रीय, दार्शनिक, वैज्ञानिक, लोक और अनुभवजन्य ज्ञान के रूप में विकसित हुई। यह परंपरा केवल पुस्तकों और ग्रंथों तक सीमित नहीं है , बल्कि समाज के आचार –विचार, जीवन–पद्धति, लोकाचार, लोक साहित्य और सांस्कृतिक परंपराओं में भी जीवंत रूप से विद्यमान है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मानव, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करना है। इसमें सत्य , धर्म, करुणा, अहिंसा, सहअस्तित्व, आत्मज्ञान और लोककल्याण जैसे मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। वेद , उपनिषद, दर्शन, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित, कला–साहित्य के साथ–साथ जनजातीय और लोकज्ञान भी इसका अभिन्न अंग हैं। इस परंपरा में ज्ञान को केवल सूचना नहीं, बल्कि अनुभव, आचरण और आत्मिक विकास से जोड़कर देखा गया है। गुरु–शिष्य परंपरा, मौखिक ज्ञान और लोकानुभव के माध्यम से यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होता रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आशय एक ऐसी समग्र और समावेशी ज्ञान–दृष्टि से है, जो मानव जीवन को नैतिक, संतुलित और अर्थपूर्ण बनाते हुए समाज और प्रकृति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

जनजातीय भाषाएँ

जनजातीय भाषाएँ वे भाषाएँ हैं जो भारत के आदिवासी समुदायों द्वारा बोली जाती हैं। ये भाषाएँ उनकी संस्कृति, परंपरा, लोकज्ञान, जीवन–दर्शन और सामाजिक पहचान की प्रमुख वाहक हैं। अधिकांश जनजातीय भाषाएँ मौखिक परंपरा पर आधारित हैं , जिनमें लोकगीत, लोककथाएँ, मिथक, कहावतें और अनुष्ठान गीतों के माध्यम से ज्ञान का संप्रेषण होता है। भारत की प्रमुख जनजातीय भाषाएँ - संथाली (ऑस्ट्रो–एशियाटिक भाषा परिवार) , मुंडारी, हो, खड़िया, गोंडी, कोया, हल्बी (द्रविड़ भाषा परिवार) , भीली, भिलाली, बारेली, कोरकू, सहरिया, नागा भाषाएँ (जैसे आओ , अंगामी) , बोडो (तिब्बती–बर्मी भाषा परिवार) जनजातीय भाषाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा को लोकज्ञान, पर्यावरणीय चेतना और मानवीय मूल्योंसे समृद्ध करती हैं। ये भाषाएँ न केवल अतीत की धरोहर हैं, बल्कि आज के समय में सांस्कृतिक विविधता, समावेशी विकास और सतत जीवन–

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

पद्धतिके लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। जनजातीय भाषाएँ भारत की सांस्कृतिक आत्मा की सजीव अभिव्यक्ति हैं, जिनका संरक्षण भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता के लिए अनिवार्य है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में जनजातीय भाषाओं का महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा की संरचना बहुआयामी और समावेशी रही है , जिसमें शास्त्रीय ज्ञान के साथ –साथ लोक और जनजातीय ज्ञान की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस संदर्भ में जनजातीय भाषाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला के रूप में उभरती हैं , क्योंकि इन्हीं के माध्यम से आदिवासी समाज का जीवनानुभव , प्रकृति–बोध और सांस्कृतिक चेतना सुरक्षित रही है। जनजातीय भाषाएँ लोकज्ञान की संवाहक हैं। इनमें कृषि , वन–प्रबंधन, जल–संरक्षण, औषधीय वनस्पतियों, पशुपालन और पर्यावरण संतुलन से संबंधित व्यवहारिक ज्ञान निहित है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा से आगे बढ़ता रहा है। यह ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यावहारिक और जीवनोपयोगी बनाता है। इन भाषाओं में निहित लोकगीत , लोककथाएँ, मिथक और अनुष्ठान भारतीय संस्कृति को मानवीय मूल्यों—जैसे सहअस्तित्व, सामूहिकता, प्रकृति के प्रति सम्मान और संतुलित जीवन–से समृद्ध करते हैं। जनजातीय भाषाएँ सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए भारत की बहुलतावादी और विविधता पूर्ण परंपरा को मजबूती प्रदान करती हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में जनजातीय भाषाओं का महत्व और भी बढ़ जाता है , क्योंकि ये सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय ज्ञान –आधारित समाधानों की दिशा में मार्गदर्शन देती हैं।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा के विकास और संरक्षण में जनजातीय भाषाओं का योगदान अत्यंत मौलिक , व्यापक और अपरिहार्य रहा है। इन भाषाओं के माध्यम से आदिवासी समाज ने अपने जीवनानुभव , लोकबुद्धि और प्रकृति–आधारित ज्ञान को सुरक्षित रखा , जो आज भी समाज के लिए उपयोगी और प्रासंगिक है। जनजातीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं , बल्कि लोकज्ञान, सांस्कृतिक चेतना और जीवन –दर्शन की सजीव वाहक हैं। इन भाषाओं में निहित लोकसाहित्य , परंपराएँ और अनुष्ठान भारतीय ज्ञान परंपरा को मानवीय, नैतिक और पर्यावरण–संवेदनशील बनाते हैं। सहअस्तित्व , सामूहिकता, प्रकृति के प्रति सम्मान और संतुलित जीवन जैसे मूल्य जनजातीय भाषाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति में गहराई से समाहित हुए हैं। इस लोकज्ञान ने भारतीय समाज को शास्त्रीय ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक और अनुभवजन्य आधार प्रदान किया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जनजातीय भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन केवल भाषायी दायित्व नहीं , बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता , सांस्कृतिक विविधता और सतत विकासके लिए अनिवार्य है। जनजातीय भाषाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ों को सशक्त बनाते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध और संतुलित ज्ञान–विरासत सौंपती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. प्रियंका सिंह-भारतीय साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा,एस. जैन पब्लिकेशन्स नई दिल्ली
- डॉ. स्वाती गौर–भारतीय ज्ञान परपंरा : एक विमर्श,प्रकाशक मीना बुक पब्लिकेशन्स दिल्ली
- नजनीश कुमार शुक्ल–भारतीय ज्ञान परंपरा और विचारक,प्रभात प्रकाशन दिल्ली

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

- प्रो. सरोज शर्मा–भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम,शिप्रा पब्लिकेशन दिल्ली
- डॉ. बद्रीनाथसिंह –भारतीय दर्शन,मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन वाराणी (उ.प्र.)
- डॉ. नीलम यादव –भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम, इंशा पब्लिकेशन्स दिल्ली
- डॉ. मनोहर भंडारी-भारतीय ज्ञान परंपरा और और समग्र स्वास्थ्य, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी
- डॉ. नेमिचन्द जैन–भीली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, पीएच–डी शोध प्रबन्ध दे.अ.वि.वि. इन्दौर
- प्रो. दिलीप सिंह -भाषा, संस्कृति और लोक,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
- श्री श्याम परमार -मालवी और उसका साहित्य,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)